



Kumhar Basti Ki Bailgadi

Rabindranath Tagore | Art by Debsmita Dasgupta

Available in Hindi

Pub: 2011 | pp 24 | 9"x7"

ISBN 978-81-89934-72-9 [pb] [hindi] | Rs 65 | World Rights: KATHA

कुम्हार बस्ती की बैलगाड़ी - पुस्तकावलोकन

कुम्हार बस्ती की बैलगाड़ी – रवींद्रनाथ ठाकुर

कथा प्रकाशन

प्रिया ९ साल की लड़की

प्रिया को पुस्तक बहुत पसंद आई। कविता अच्छी लगी। हँसते हुए उसने कहा कि कविता बहुत अच्छी है। ठाकुरजी के बारे में जानकारी भी दिलचस्प लगी। वह नहीं जानती थी कि “जन गण मन” के रचयिता ठाकुरजी की हैं। उनका चित्र देखकर वह खुश हुई।

राखी ८ साल की लड़की

पुस्तक के चित्र बड़े अच्छे लगे। कविता सुनने में भी मज़ा आया।

चिरंतन - ११ साल का लड़का

मुख पृष्ठ पर घोंसले का चित्र क्यों है? पुस्तक अच्छी है। चित्र भी अच्छे हैं। (लेकिन चौथे पन्ने पर) यहाँ हाट का चित्र क्यों नहीं हैबेलन झांझरी आदि के चित्र क्यों नहीं हैं? नाव का चित्र भी नहीं है।

राजलक्ष्मी - बच्चों को कहनियाँ पढ़कर सुनाने में एवं साहित्य में अभिरुचि रखती हैं, अरविंदगुप्ताजी के लिए अनेक पुस्तकों का अनुवाद भी किया है।

पुस्तक के विषय से भी बढ़कर चित्र सुंदर लगते हैं परंतु कहीं कहीं चित्र, पुस्तक में लिखित विषय से संबंध नहीं रखते। बच्चों को चित्रों के कारण पुस्तक पसंद आयेगी। पुस्तक का शीर्षक ठीक नहीं लगता।

लीला गरडी

देखते ही पुस्तक आकर्षक लगती है, विशेषकर पुस्तक का शीर्षक “कुम्हार बस्ती की बैलगाड़ी”। पढ़ने के लिए भी पुस्तक आसान और अच्छी लगती है। रंग बिरंगे चित्र सुंदर बने हैं। “सरसों चने मैदा आटा.....टा टा” वाक्य पढ़ने में बड़ा मज़ेदार लगता है। आगे की पंक्तियों का लय मन को हर लेता है। लेकिन यह क्या है? कोई अलग लिपि में कुछ लिखा है। लगता है बंगला लिपि में लिखा है। घुमावदार अक्षर और बिंदुओं की अधिकता सुंदर रंगोली की याद दिलाती हैं। अगले पन्ने पर और एक कविता लिखी दिखाई देती है। यह तो देवनागरी लिपि में लिखी है पर भाषा हिंदी नहीं बंगला है। उसके आगे के पन्ने पर रवींद्रनाथ ठाकुरजी का चित्र तथा परिचय है। उनके बारे में जानकारी आसक्ति पूर्ण है। ठाकुर जी का चित्रसहित परिचय देने का विचार अत्यंत मनोज्ञ है। इतना ही नहीं मूल कविता को बंगला एवं हिंदी दोनों लिपियों में जो प्रस्तुत किया गया है, एक अत्यंत अर्थपूर्ण और उपयोगी कल्पना है। इससे वाचकों को ठाकुरजी का, और बंगला लिपि का परिचय हो जाता है। कविता को हिंदी लिपि में पढ़ने का अवसर प्रदान करके बंगाली भाषा की ध्वनियों का परिचय कराना एक अत्यंत उदात्त विचार है। इससे पोषकों को, बच्चों का उनके बचपन में ही इस ओर ध्यान आकर्षित करने का अच्छा अवसर मिलता है जो बहुत अमूल्य साबित होता है। इससे वाचकों का, मूल कृति के साथ एक तरह का संबंध स्थापित हो जाता है। भाषाओं और लिपियों के प्रति वाचकों की दृष्टि विशाल बनाने में इसका अद्भुत योगदान गोचरित होता है। बहरहाल पुस्तक अच्छी है।

पुस्तक पढ़ने के बाद मन में यह प्रश्न उठता है कि इसका शीर्षक “कुम्हार बस्ती की बैलगाड़ी” क्यों रखा गया है? यह रवींद्रनाथ ठाकुर की कविता का अनुवाद है। अनुवाद उत्कृष्ट न होनेपर भी बुरा नहीं है। मेरी सहेली के पास करीब ५० साल पूर्व प्रकाशित बंगला भाषा की मूल कृति “सहज पाठ” भाग दो की प्रति थी। उन्होंने मुझे बताया कि उसमें इस कविता का शीर्षक “हाट” है जो हर दृष्टि से उचित लगता है। क्यों कि कविता में बैल गाड़ी के बारे में बहुत कम और हाट के बारे में अधिक लिखा गया है। मूल कविता तुक से परिपूर्ण और लयबद्ध है। उसे पढ़ना या

सुनना एक आह्लादमय अनुभव है। हिंदी के अनुवाद में प्रास तो दिखाई देता है परंतु एकाध जगह लय का अभाव है। यह प्रश्न उठता है- क्या हिंदी अनुवाद में मूल के गुण व्यक्त नहीं हो सकते?

चित्रांकन:

रंग और चित्र काफी आकर्षक हैं। पात्र सजीव लगते हैं। सरलता से भरे चित्र सुंदर भी हैं। हाट का चित्र सहजता से भरा है। कविता में वर्णित न होने पर भी, विषय से संबंध रखने वाले अन्य विषय चित्र में दिखाये जाने से पुस्तक सुंदर बनकर बच्चों को और भी आकर्षित करती हैं। उदाहरण के लिये- मटकों से भरी बैलगाड़ी के चित्र में नदी, पास की ज़मीन में भिन्नता दिखाने का चित्र, नदी में तैरते बच्चों के चित्र में, पेड़, पेड़ पर पक्षी आदि। पर दो तीन चित्रों में कविता में वर्णित विषयों के चित्र नहीं मिलते। इतना ही नहीं इन चित्रों का कविता से कोई संबंध नहीं है।
